भोटिया जनजाति के सांस्कृतिक समारोहों में परम्परागत पौणा नृत्य की विशेषताएं एवं लोक प्रियता

डा0 बी0 पी0 देवली,

असि0प्रोफेसर भूगोल, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर (चमोली)

प्रस्तावना

नगाधिराज हिमालय को प्राचीनकाल से ही अनेक मान्यताओं के साथ–साथ हिन्दू सभ्यता के विकास का आधार माना जाता रहा है। यह सर्वविदित है कि हिन्दू धार्मिक ग्रंथों के रचनाकारों की तपस्थली भी हिमालय क्षेत्र रहा है। जिनकी महिमा आज जग–जाहिर है। अनेक ऋषि–मुनियों ने अपना जीवन हिमालय की श्वेत धवला युक्त गगनचुम्बी शिखरों की गुफाओं में व्यतीत किया। इसी प्रकार प्राचीनकाल में भिन्न–भिन्न जन समुदायों ने भिन्न–भिन्न कारणों से हिमालय की सुरम्य उपत्यकाओं को अपने जीवन यापन का क्षेत्र बनाया। इसीलिए हिमालय की इन उपत्यकाओं में अनेकों समाजार्थिक विविधताओं युक्त मानव समुदाय निवास करते हैं, जो लगभग 2500 किमी0 लम्बाई व 150 किमी0 चौड़ाई युक्त हिमालयी क्षेत्र में अनेकों भौगोलिक विषमताओं के साथ सामंजस्य स्थापित किये हुए हैं। हिमालय के पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों में जहां अनेकों आदिवासी जनसमुदायों में निवास करते हैं तो हिमालय के पश्चिम मध्य भाग में परम्परागत व्यवसायरत जनजातियां निवास करती हैं जिनमें से बहुतायत जनसंख्या में निवास करने वाली प्रमुख भोटिया जनजाति है। प्रायः देखने में आता है उच्च हिमालयी क्षेत्रों में निवास करने वाले जनजाति समुदायों में सामाजार्थिक अन्तर हैं। किन्तु संवेधानिक आधार पर उन्हें अनुसूचित जनजाति सदस्यों से नवाजा जाता रहा है। हिमालयी क्षेत्र के अलग–अलग नदी–उपत्यकाओं में निवासित अलग–अलग भोटिया अनुसूचित जनजाति के सामाजिक रीति–रिवाजों में भी अन्तर देखने को मिलते हैं।

उत्तराखण्ड राज्य के सीमान्त जनपदों में निवासित भोटिया अनुसूचित जनजाति के सात उपसमूह/वर्ग (शोका, दारमी, चौंदासी, व्यासी, तोलछा, मार्छा व जाड़) हैं। जनजाति जनसंख्या के आधार पर राज्य में इनकी कुल जनसंख्या लगभग 4.50 प्रतिशत है। राज्य के जनपद चमोली में भोटिया जनजाति के दो वर्ग तोलछा व मार्छा हैं, जो जनपद चमोली की दो नदी–उपत्यकाओं (धौली गंगा व अलकनन्दा) के दोनों तरफ अनेक गांवों में निवास करते हैं, सामाजिक आधार पर दोनों वर्ग एक–दूसरे से भिन्नता रखते रहे, किन्तु धीरे–धीरे दोनों वर्गों के मध्य सामाजिक दूरी घटती जा रही है, जो मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर उचित है। इनके सांस्कृतिक समारोहों, विशेषकर वैवाहिक कार्यक्रमों में पौणा नृत्य विशेष आकर्षण का व लोकप्रिय का विषय बना रहता है।

भोटिया जनजाति का भौगोलिक व ऐतिहासिक परिवेश

हिमालय की मनोहारी वादियों से युक्त अति सुन्दर प्राकृतिक उपत्यकाओं में निवास करने वाली भोटिया जनजाति का भौगोलिक परिवेश मानो प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करके जीवन व्यतीत करने वाला है। अनेक प्रकार की भौगोलिक विषमताओं में जीवन यापन करना मानों इनके लिए प्रकृति का वरदान है। हिमालय की

संकरी घाटियों के दोनों तरफ तीव्र ढ़लानों व छोटी–छोटी नदी वेदिकाओं पर अपने पशुओं व परम्परागत कुटीर उद्योगों के साथ जीवन व्यतीत करने वाली भोटिया जनजाति के अधिवास प्रायः हिमालय के शीत कटिबंधीय क्षेत्र में विद्यमान थे, किन्तु समय व आधुनिकता के साथ–साथ इनका स्थानान्तरण शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में होता रहा। परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण अनेक परिवार अपने मूल गांवों से मैदानी क्षेत्रों में भी पलायन कर चुके हैं। साथ ही अनेक परिवार स्थाई तौर पर अपने शीतकालीन अधिवासों में रहने लगे हैं। उत्तराखण्ड राज्य के महान हिमालयी क्षेत्र के पांच नदी–घाटियों में निवास करने वाली भोटिया जनजाति के समुदायों को सात अलग–अलग नामों से जाना जाता हो, जिनके भौगोलिक परिवेश में अंतर नहीं है, किन्तु इनके सामाजार्थिक परिवेश में कुछ अन्तर इनकी पहचान को अलग–अलग प्रदर्शित करते हैं। प्रमुख रूप से इनकी बोलियां व वेशभूषा को इनकी पहचान को अलग–अलग करती हैं। नगरीय वातावरण के प्रभावों से इनका सामाजार्थिक परिवेश तीव्र गति से आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहा है। पौणा नृत्य प्रमुख रूप से जनपद चमोली में महान व मध्य हिमालय में निवासित भोटिया जनजाति के दो वर्गों (तोलछा व मार्छा) के सांस्कृतिक समारोहों का एक हिमालयी विशेष आकर्षण युक्त नृत्य है।

ऐतिहासिक तथ्य इनके मूल को अलग–अलग प्रकार से वर्णित करते रहे हैं, किन्तु आर्यावर्त के उत्तर में विराजमान सजग प्रहरी नगाधिराज हिमालय के क्षेत्र में इनकी पीढ़ियों द्वारा रचाये–बसाये निवास क्षेत्रों से प्रतीत होता है कि वास्तव में भोटिया समुदाय महान हिमालय क्षेत्र के मूल निवासी हैं। भले ही इनका प्राचीनकालीन तिब्बती वस्तु विनिमय व्यापार के प्रभाव से इन्हें इतिहासकारों व मानवशास्त्रियों ने तिब्बत मिश्रित माना हो, किन्तु हिमालय के अनेक मानव समुदायों से विदित होता है कि कठिन भौगोलिक वातावरण में निवास कर रहे मानव अनेक अवसरों के बावजूद आज भी अपने प्राचीन मूल क्षेत्र से बंधी हुई हैं। इसी प्रकार हिमालय क्षेत्र में निवास करने वाले भोटिया समुदायों (आदिवासी संस्कृति रहित) को भी हिमालय के प्राचीन मूल निवासी के रूप में माना जाना चाहिए। इन्हें अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में तब रखा गया जब इनकी अर्थव्यवस्था चीन युद्ध (1962) के पश्चात् लड़खड़ा गई थी। अतः भोटिया समुदाय हिमालय क्षेत्र की एक मात्र प्राचीनकालीन वस्तु विनिमय व्यापार युक्त समुदाय रहा है।

सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन

मानव सभ्यता के साथ–साथ मानव समुदायों में सांस्कृतिक क्रियाकलापों का विकास व विस्तार होता रहा। जलवायुगत व स्थानीय विशेषताओं के आधार पर मानव समुदायों के सांस्कृतिक क्रियाकलापों में विविधताएं देखी जा सकती हैं जिनमें निरन्तर परिवर्तन व सुधार होता रहा। महान व मध्य हिमालय की नदी घाटियों में निवास करने वाली जनपद चमोली की भोटिया जनजाति के दो वर्गों तोलछा व मार्छा के सांस्कृतिक क्रियाकलापों में लगभग चार दशकपूर्व तक अधिक अन्तर देखने को मिलते थे। विशेषकर दोनों वर्गों के मध्य वैवाहिक संबंध नहीं होते थे, किन्तु शिक्षा व सामाजिक परिवर्तनों के साथ–साथ सब कुछ बदलता रहा, जो समय की मांग भी थी। इसीलिए वर्तमान समय में दोनों वर्ग के मध्य सामाजिक–सांस्कृतिक दूरियां कम दिखाई देती हैं। दोनों वर्गों द्वारा सांस्कृतिक संस्कारों व समारोहों का आयोजन परम्परागत रीति–रिवाजों के साथ सनातन धर्म की अवधारणाओं के अनुरूप सभी प्रकार के संस्कारों व सांस्कृतिक क्रियाकलापों को पूर्ण किया जाने लगा है। सनातन धर्म में प्रमुख रूप से जन्म, विवाह व मृत्य उपरान्त अपनाये जाने वाले

संस्कार प्रचलन में हैं, जिन्हें तोलछा व मार्छा दोनों वर्गों के लोग सामाजिक रीति–रिवाज के अनुरूप निभाते हैं, सांस्कृतिक क्रियाकलापों में इन दोनों वर्गों के अपने–अपने समुदायों के मध्य अत्यधिक घनिष्ठता देखने को मिलती है। किसी भी प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम को यह लोग आपसी सहयोग से भली–भांति सम्पन्न करते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के सांस्कृतिक कार्यों को निभाने में अपने–अपने वर्ग के सम्पन्न परिवारों का पूर्ण सहयोग मिलता रहता है, जिस कारण सांस्कृतिक कार्यों के आयोजन में अन्तर नहीं दिखाई देता। सनातन धर्म में मनाये जाने वाले सभी त्यौहार, स्थानीय मेले, सामूहिक देवपूजन आदि दोनों वर्गों द्वारा विशेष आकर्षण व विधि विधान के साथ पूर्ण किये जाते हैं।

परम्परागत पौणा नृत्य

वैश्विक परिदृश्य के आधार पर आज घनघोर जंगलों में जीवन व्यतीत करने वाले आदिवासी समुदायों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मानव के जीवन में पाषाणकाल से ही नृत्य एक आधार रहा है। इसीलिए आज भी सैकड़ों वनवासी अपनी हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति के अनुरूप नृत्य करते हुए देखे जाते हैं। विकाससील मानव के विकास के साथ–साथ नृत्य कला में परिवर्तन होता रहा। आज यह मानव समुदायों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आमोद–प्रमोद का प्रमुख आधार बन गया है। इन्हीं आधारों पर हिमालय की विषय भौगोलिक धरा की विषम जलवायु में जीवन यापन करने वाले भोटिया जनजाति के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पौणा नृत्य एक परम्परागत विशेष नृत्य है, जो मात्र जनपद चमोली के धौली व अलकनन्दा घाटियों में निवास करने वाले तोलछा व मार्छा भोटियाओं द्वारा अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में किया जाता है। प्रमुख रूप से पौणा नृत्य भोटियों के वैवाहिक संस्कार कए एक प्रमुख नृत्य है। भोटियों के वैवाहिक कार्यक्रम लगभग चार दिनों तक चलने वाला एक लम्बी प्रक्रियायुक्त एवं प्रमुख रूप से खान–पान व पारिवारिक मिलन का एक विशेष सुअवसर माना जाता है। पौणा शब्द के दो अर्थ होते हैं प्रथम अर्थ बारात अर्थात विवाह संस्कार के समय संपादित होने वाली सम्पूर्ण प्रक्रिया को 'पौणा' कहा जाता है तथा दूसरा अर्थ बारात में वर पक्ष की ओर से सम्मिलित सभी लोग 'पौणा' कहलाते हैं, जो बारात के साथ विशेष परिधानों युक्त बारातियों द्वारा एक सुरताल के साथ धीरे–धीरे कदम मिलाते हुए वधू पक्ष के आवास/अधिवास की ओर बढ़ने का सुअवसर होता है, जिसे भोटिया जनजाति की स्थानीय बोली में पौणा नृत्य कहा जाता है।

पौणा नृत्य की विशेषतायें

मानव समुदायों में प्रचलित अनेक प्रकार की नृत्यकालों का समावेश है। मानवीय परम्पराओं ने इनकी बुनियादें डाली अथवा इनको अपने जीवन में आमोद–प्रमोद का आधार बनाया है। नृत्य कला एक व्यापक विषय है। कुछ नृत्य सर्वव्यापी हो गये हैं और कुछ सीमित क्षेत्रों में सिमटे हुए हैं, किन्तु विश्व के लगभग सभी मानव समुदायों में नृत्य की अलग–अलग विधाएं व परम्परायें हैं, जिनकी अलग–अलग विशेषताएं देखने को मिलती हैं। भोटिया जनजाति में व्याप्त पौणा नृत्य भी एक परम्परागत एवं अनेक विशेषताओं युक्त नृत्य प्रचलन में है। सामान्यतः स्थानीय वैवाहिक समारोहों में बैंड व स्थानीय वाद्ययंत्रों के साथ अनेक गीतों के लय व ताल पर नृत्य करने हुए अनेक प्रकार की वेश–भूषा में दिखाई देते हैं किन्तु भोटियों के वैवाहिक समारोहों में पौणानृत्य की एक नहीं बल्कि अनेक विशेषताएं हैं। आज से लगभग तीन दशकपूर्व तक महिलाओं को बारात के साथ नहीं देखा जाता था, तब मात्र पुरुष वर्ग सीमित संख्या में बाराती हुआ करते थे। विशेषकर युवा वर्ग के लोग सामान्य परिधानों में बाराती

बनकर पौणा नृत्य करते हुए देखे जाते थे। धीरे–धीरे सामाजार्थिक विकास के साथ बारात का स्वरूप बदलने लगा। बारात में पुरुष, महिलाएं, बच्चे सभी प्रकार के लोग भिन्न–भिन्न परिधानों में जाने लगे। किन्तु बारात में सबसे आगे ढ़ोल, दमाऊं, मशकबीन, ढ़ाल, तलवार के साथ दो पंक्तियों में समान परिधानयुक्त बाराती वाद्ययंत्रों की धुन व ताल पर समान नृत्य करते हुए विशेष आकर्षण युक्त दिखाई देते हैं। नृत्यकारों में पुरुष के सिर में काली टोपी, ऊनी सफेद कोट, हल्का बादामीरंग युक्त पजामा या पैंट, सामान्य जूते तथा महिलाओं द्वारा सिर में सफेद व नक्काशीदार छुपला व चुटकी काले रंग की अंगिया, ऊनी धोती व रंगीन पेटीकोट के साथ ही अनेक प्रकार के आभूषण–गुलबन्द, पौंछी, स्यूं–सांगल, सुत्ता, मुरकी, कमरबन्द आदि धारण किये हुए रहते हैं। सभी वस्त्र व आभूषण स्वनिर्मित व स्थानीय होने से इनकी विशेषता झलकने लगती है। बारात में एक पंक्ति में उक्त परिधान व आभूषणों से सजी हुई महिलाएं व दूसरी पंक्ति में परम्परागत परिधान पहने पुरुष हाथों में ढ़ाल व तलवार के साथ वाद्ययंत्रों में ढ़ोल, दमाऊं की थाप व मशकबीन की मनमोह लेने वाली वीणा रूपी आवाज पर नृत्यकारों के साथ ही अन्य बाराती भी ताल से ताल मिलाते हुए धीरे–धीरे आगे बढ़ते रहते हैं। पर्वतीय क्षेत्र में पैदल मार्गों की निकटता कभी–कभी नृत्यकारों में एक पुरुष एक महिला क्रमिक रूप में पौणा नृत्य करते हुए आगे बढ़ते हैं। वाद्ययंत्रों से निकलने वाली धुन पर ताल के अनुसार सभी नृत्यकारों को शारीरिक संतुलन बनाये रखने के साथ–साथ मंद–मंद गति के साथ शरीर व हाथ–पांवों की दिशा बदलना होता है। विशेष परिधानयुक्त नृत्यकारों की संख्या लगभग बीस तक होती है। अन्य लोग बाराती के रूप में साधारण वेश–भूषा के साथ गंतव्य की ओर बारात के साथ चलते रहते हैं। नृत्य के साथ गीत गाने की परम्परा नहीं है। मात्र वाद्ययंत्रों से अनेक प्रकार की धुन के साथ अनेक प्रकार के ताल बदलते रहते हैं। भोटियों की विशेष बारातों में ढाल–तलवार धारी सफेद वस्त्र धारण किये हुए दो से आठ पुरुषों का एक दल भी मौजूद रहता है, जो नृत्य करते हुए सबसे आगे चलते हैं। यह नृत्यकार रास्ते में कहीं–कहीं पर ढ़ाल–तलवार के साथ खेल अथवा प्रतिस्पर्धा दिखाते रहते हैं। बारात जब अपने अंतिम गंतव्य स्थान पर पहुंच जाती है तब एक विशेष 'सरो नृत्य' अनुभवी दो बारातियों द्वारा किया जाता है। 'सरो' नील गाय प्रजाति का एक जंगली पशु हिमालयी क्षेत्र में विचरण करता है तथा फसलों को अत्यधिक नुकसान पहुंचाता है। इस नृत्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लिए किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता तथा न इसके कोई प्रशिक्षण केन्द्र हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जब कभी यह नृत्य किया जाता है तब बच्चे नृत्य का निहारने के साथ–साथ प्रतिभाग भी करने लगते हैं। इस प्रकार भोटियों के बच्चों में बचपन से ही पौणा नृत्य की कला का समावेश हो जाता है, जो युवा होते–होते इस नृत्य में निपुण हो जाते हैं।

पौणा नृत्य की लोकप्रियता

मानव समुदायों में प्राचीनकाल से ही अनेक प्रकार के नृत्य प्रचलन में रहे हैं। इनमें से कुछ क्षेत्र विशेष तक सीमित है तो कुछ प्रचार–प्रसार के आधार पर तथा कुछ लोकप्रियता के कारण सर्वव्यापी हो गये हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में अलग–अलग विस्तृत भू–भाग युक्त नदी घाटियों में नृत्यकलाओं में अन्तर के साथ–साथ उनकी लोकप्रियता में भी अन्तर देखने को मिलता है। हिमालय क्षेत्र के अनेक नदी–घाटियों में निवास करने वाले भोटिया जनजाति के अलग–अलग वर्गों में भी अलग–अलग नृत्यकलाएं लोकप्रियता को दर्शाती है। इन्हीं में से अलकनन्दा नदी प्रवाह क्षेत्र में भाटिया जनजाति के दोनों वर्गों (तोलछा व मार्छा) में पौणा नृत्य की प्रस्तुति मनमोहक व अति लोकप्रियता युक्त है। लोकप्रियता के कारण

आज यह नृत्य भोटिया जनजाति के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मनोरंजन व उत्साहवर्द्धन के लिए वाद्ययत्रों के अति मनभावन धुनों पर शांतभाव से प्रस्तुत किया जाने वाला भोटियों के ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसकी प्रस्तुति की चाह स्थानीय लोगों में भी बढ़ती जा रही है। स्कूलों, कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा इस नृत्य की प्रस्तुति प्राथमिक के साथ दी जाती है। जनपद व प्रादेशिक स्तर पर लगने वाले मेलों में यह नृत्य अपनी एक विशेष पहचान बना चुका है। राज्य व राष्ट्रीय राजधानियों में भी विशेष अवसरों पर इसकी झलक देखी जा सकती है। जनपद चमोली से स्थानान्तरित व पलायन कर उत्तर भारत के अनेक नगरों में भोटिया परिवारों के सांस्कृतिक समारोहों व कार्यक्रमों के सुअवसरों पर भी इस नृत्य की झलक देखने को मिलती है। यह नृत्य समाज को जोड़ने का काम करता है। एक साथ समूह में नृत्य करने में आपसी मतभेद, मनभेद दूर होते हैं। लोग एक दूसरे के समीप आते हैं। आपस में भाईचारा व परम्परा जीवित रहती है। परम्पराओं का निर्वहन पूरे समाज या वर्ग द्वारा होना चाहिए, तभी कोई परम्परा जीवित रहकर लोकप्रियता को दर्शाती है।

निष्कर्ष

भारत प्राचीनतम संस्कृतियों के साथ ही अनेक प्रकार की विविधताओं का देश है। भारत के पूर्व से पश्चिम व उत्तर से दक्षिण तक अनेकों–अनेक जनसमुदायों में विद्यमान अनेकों विविधताएं भारतीय जनमानस की पहचान हो प्रकट करते हैं इसीलिए भारत में प्राचीनकाल से ही विविध नृत्यकलाओं का समावेश भी पाया जाता है। हिमालय की नदी–घाटियों में निवास करने वाले नाना प्रकार के मानव समुदायों में तो मानो नृत्य के महादेव नटराज ने विविध नृत्यकलाओं को बिखेरा हो। हिमालय क्षेत्र में निवास करने वाली भोटिया जनजाति के लोग इससे अछूते नहीं हैं। जनपद चमोली के अन्तर्गत भोटिया जनजाति के दोनों (तोलछा व मार्छा) वर्गों में अनेक प्रकार की नृत्य कलाओं को देखा जा सकता है, किन्तु पौणा नृत्य उक्त दोनों वर्गों का परम्परागत एवं अनेक विशेषताओं के साथ ही लोकप्रियतायुक्त है, जिसे इनके सांस्कृतिक आयोजनों व अन्य सुअवसरों पर प्राथमिकता के साथ किया जाता है। इनके वैवाहिक समारोहों की मुख्य झलक ही पौणा नृत्य है। किसी भी प्रकार की मानव समुदाय व समाज में उसकी परम्परायें उसकी पहचान को दर्शाती है। इसीलिए किसी भी समुदाय को अपनी परम्पराओं को जीवित रखने के लिए उनको अपनाते रहना चाहिए। भोटिया समाज भी अपनी परम्परागत नृत्यकला को संजोकर रखा है, जो अपने आप में अद्वितीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. घोष, ए0 (2007), द भोटियाज इन इंडियन हिमालयाज, बी0आर0 पब्लिशिंग कारपोरेशन दिल्ली।
2. जोशी, ए0के0, (1963), भोटान्तिक जनजाति–ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
3. डबराल, एस0पी0 (1962), उत्तराखण्ड के भोटान्तिक, वीरगाथा प्रकाशन, दुगड्डा गढ़वाल।
4. देवली, बी0पी0 (1991), हैबिटेट इकानोमी एण्ड कल्चर ऑफ ट्राइबल पीपुल इन चमोली डिस्ट्रिक्ट, ए ज्योग्राफिकल स्टडी, अप्रकाशित पीएच0डी0 शोध प्रबंध, बी0एच0यू0 वाराणसी।
5. नौटियाल, शिवानन्द (1990), उत्तराखण्ड की जनजातियां, सुलभ प्रकाशन लखनऊ।

6. बिष्ट, बी0एस0 (1992), भोटिया जनजाति, विवेक प्रकाशन दिल्ली।

7. लाल, जी0एस0 (1986), भोटिया जनजाति के धर्म एवं रीति–रिवाज, हिमालयन निवासी और निसर्ग शोध पत्रिका सं0 4, हिमालय सेवा संघ, नई दिल्ली।

8. शर्मा, बी0आर0 (1985), हिमालय की पौराणिक जनजातियां, आर्य प्रकाशन मण्डल दिल्ली।